डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–31मार्च, 2020)

आदिकाल की विशेषताएं

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल टर्निंग प्वाइंट नहीं है, बल्कि बिगनिंग प्वाइंट है। बिगनिंग और टर्निंग प्वाइंट में सबसे बड़ा फर्क यह होता है कि बिगनिंग में सबकुछ नये सिरे से बनता है। इसलिए इसे फॉरमेटिंग टाइम भी कह सकते हैं। टर्निंग प्वाइंट में सभी बनी–बनाई चीजें पूर्व के अन्तःसूत्रों के साथ जुड़े होने के बावजूद बदलने लगती है। आदिकाल बिगनिंग प्वाइंट है फिर भी उसकी अद्‌भुत विषेषताएं हैरान करने वाली हैं। आइए आदिकाल की विषेषताओं पर सूक्ष्मता से विचार करते हैं।

आदिकाल की पहली विषेषता यह है कि उसे अनेक नामों से पुकारा जाता है। कोई इसे 'चारण काल' कहते हैं तो कोई 'वीरगाथा काल' और कोई 'सिद्ध सामंत काल'। इतने नामों से एक समय को अलंकृत करने का मतलब क्या है ? क्यों नहीं लोग एक मत हो सके ? कि एक ही साथ यहां चारण काव्य, वीरगाथात्मक काव्य और सिद्ध सामंत काव्य की झलक पाकर लोग भ्रमित तो नहीं हो गये थे ? आगे हम इस पर चर्चा करेंगे।

इस आरंभिक युग की दूसरी विषेषता है कि यह 'राजनीतिक संघर्ष और युद्धों के को लेकर बेहद उथल–पुथल का समय था। इतिहास में यह समय 'हर्ष के पतन का काल' कहा जाता है। महान राजा हर्षवर्द्धन की मृत्यु के बाद केन्द्रीय षासन की षक्ति कमजोर पड़ने लगी थी, जिसके कारण छोटे–छोटे राज्य–रजवाड़े स्थापित होने लगे थे। इन छोटे राज्यों के बीच आपसी वैमनस्य और कलह इतना बढ़ गया था कि राष्ट्रीयता की भावना का लुप्त होना स्वाभाविक था। राजनीतिक क्षेत्र की तरह धार्मिक क्षेत्र में भी अस्थिरता व्याप्त हो गयी। सर्वाधिक लोकप्रिय बौद्ध धर्म के 'हीनयान' और 'महायान' में खंडित होने और उसमें ब्राह्मणवाद की घुसपैठ के कारण जनता का विष्वास देवी–देवताओं की पूजा, मूर्ति पूजा तथा तंत्र–मंत्र और जादू–टोने में तब्दिल होकर चमत्कारी किस्से, साधु–संन्यासी और लोक साधना का वर्चस्व बढ़ने लगा था। इसके साथ ही जैन, षैव और षाक्त संप्रदाय भी सक्रिय होने लगे थे। इन परिस्थितियों के अनुरूप साहित्य भी निर्मित हो रहा था। बौद्ध धर्म के अवषेषों– चौरासी सिद्धों के साधनात्मक सिद्ध साहित्य– 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता', 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता', जैन धर्मावलम्बी साधु और मुनि अपने 'रास' और 'चौपाई' साहित्य के द्वारा जैन तीर्थंकरों और षलाका पुरुषों की गाथा प्रचारित कर रहे थे। इसी समय उत्तर भारत में मुस्लिम

राज्य स्थापित हो जाने के कारण राज्याश्रित कवि और षायरों द्वारा अरबी–फारसी के साथ–साथ प्रचलित लोकभाषा में भी रचनाएं सामने आयीं। इसी समय अमीर खुसरो (14वीं षताब्दी) भी लोकप्रिय हुए। इस प्रकार विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों ने इस काल में तीन तरह के साहित्य को जन्म दिया। इसमें पहला आध्यात्मिक साधना से संबंधित साहित्य, दूसरा, वीरगाथा से संबंधित साहित्य और तीसरा विविध प्रकार के मनोरंजक लोक साहित्य हैं।

1. आध्यात्मिक साहित्य :– इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण षाखा नाथपंथ है। नाथपंथ के प्रवर्तक गोरखनाथ के गुरु मत्स्येन्द्र नाथ थे। गोरखनाथ ने नाथपंथ को ऊँचाई प्रदान की और अपने प्रभाव से षैव और षाक्त साधनाओं को मिलाकर षिवषक्ति योग साधना का प्रचार किया। इनकी काया षुद्धि–साधना हठयोग पर आधारित था। प्राणायाम और ध्यान द्वारा कुंडलिनी जाग्रत कर सिद्धियां प्राप्त करने का विधान था। गोरखनाथ की रचनाएं संस्कृत और पुरानी हिन्दी (अपभ्रंष) में मिलती है। 'गोरक्ष सिद्धांत', 'सिद्ध साधना पद्धति' और 'कापालिक साधना पद्धति' संस्कृत की रचनाएं हैं। अनेक साधनात्मक उपदेष और अनुभव 'गोरखवाणी' में मिलते हैं। जिसे बाद में हम कबीर के यहां देख सकते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाथपंथ को संत काव्यधारा के उद्‌गम के रूप में देखा है।
2. वीरगाथा साहित्य :– वीरों के चरितगान का साहित्य वीरगाथा साहित्य है। अधिकांष वीरगाथाकार चारण या भाट थे। वीरगाथात्मक प्रवृत्ति से युक्त साहित्य प्रायः राजस्थान के राजाओं से संबंधित है। दलपत विजय कृत 'खुमान रासो' (813–943 ई0), नरपति नाल्ह रचित 'बीसलदेव रासो' (1155 ई0), भट्‌ट केदार कृत 'जयचन्द्र प्रकाष' (12वीं षताब्दी), मधुकर कवि कृत 'जसमयंक चन्द्रिका' (12वीं षताब्दी), षारंगधर कृत 'हम्मीर रासो', नल्हसिंह कृत 'विजयपाल रासो', चन्द बरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो', जगनिक कवि कृत 'परमाल रासो' आदि मुख्य हैं।

   इस प्रकार आदिकाल में वीरगाथात्मक प्रवृत्ति की बहुलता और उसकी लोकप्रियता को लेकर रामचंद्र षुक्ल ने आदिकाल को 'वीरगाथाकाल' कहना उपयुक्त समझा।
3. अन्य विविध रचनाएं :– अन्य विविध रचनाओं में मुल्ला दाऊद कृत 'चंदायन', अमीर खुसरो (1253–1325 ई0) की मुकरियां और पहेलियां प्रसिद्ध है। इनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'खालिकवारी' एक प्रकार का फारसी–हिन्दी का कोष है। अमीर खुसरो अलाउद्दीन खिलजी के समकालीन थे, परन्तु इनका रचनाकाल अनेक षासकों के समय तक विस्तृत रहा है। ये निजामुद्दीन औलिया के षिष्य थे और दिल्ली के गुलाम वंष, खिलजी वंष और तुगलक वंष के राजाओं के दरबारी कवि थे। खुसरो की एक पहेली का नमूना देखिये–

   तरवर से एक तिरिया उतरी, उसने बहुत रिझाया,
   बाप का उसने नाम जो पूछा, आधा नाम बताया।

आधा नाम पिता पर प्यारा, बूझ पहेली मोरी।
अमीर खुसरो यों कहें, अपने नाम न बोरी।

– निबोरी

इस प्रकार इस बिगनिंग प्वाइंट की अनेक अद्‌भुत विषेषताएं एक साथ देखने को मिलती हैं। इस काल में अनेक काव्यरूपों का विकास हुआ तथा अनेक भाषाओं जैसे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंष और हिन्दी के रूपों की झलक मिलती है। इस काल में संस्कृत के बड़े–बड़े कवि उत्पन्न हुए, जिन्होंने 'अलंकृत काव्य परंपरा' को एक नया उत्कर्ष प्रदान किया। दूसरी ओर अपभ्रंष के महान कवि हुए, जिन्होंने अत्यंत सरल, सहज, संक्षिप्त भाषा में अपने मार्मिक मनोभावों को प्रकट किया। श्री हर्ष के 'नैषधचरित' के अलंकृत ष्लोकों के साथ हेमचंद्र के व्याकरण में आये अपभ्रंष दोहों को देखने व तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चलता है। इसी तरह धर्म और दर्षन के क्षेत्र में भी महान प्रतिभाषाली आचार्यों का उद्‌भव इस काल के महत्त्व को दर्षाता है। निरक्षर किन्तु ज्ञानी संतों के ज्ञान–प्रचार की बुनियाद इसी काल में पड़ी थी। अब्दुर्रहमान या अद्यहमान के 'संदेषरासक' के वर्णन की अद्वितीयता को हम इसी काल में देखते हैं। इस काल के अपभ्रंष ने खड़ी बोली हिन्दी का मार्ग प्रषस्त किया, जिसको लेकर आज हम गर्व करते हैं। किन्तु यह सामंती काल होने के कारण इस प्रारंभिक युग में सामंतो का कहर आम जनता को आर्थिक तौर पर बदहाल और जर्जर बनाकर रख दिया था। यह एक तरह की ऐसी गुलामी थी जो भारतीयों को स्वतंत्रता की वेदी पर मिली थी।

दिनांक :– 31 मार्च, 2020

– महेष प्रसाद सिन्हा